MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Special Issue, February- 2019
International Multilingual Refereed Research Journal

VIDYAWARTA

International Seminar
on

Towards Sustainable Women Health: Decoding the Menstruation Taboo

सतत महिला स्वास्थ्य के परिप्रेक्ष्य में रजोधर्म की वर्जना का विवेच

Sponsored by
Department of Higher Education, U.P

99

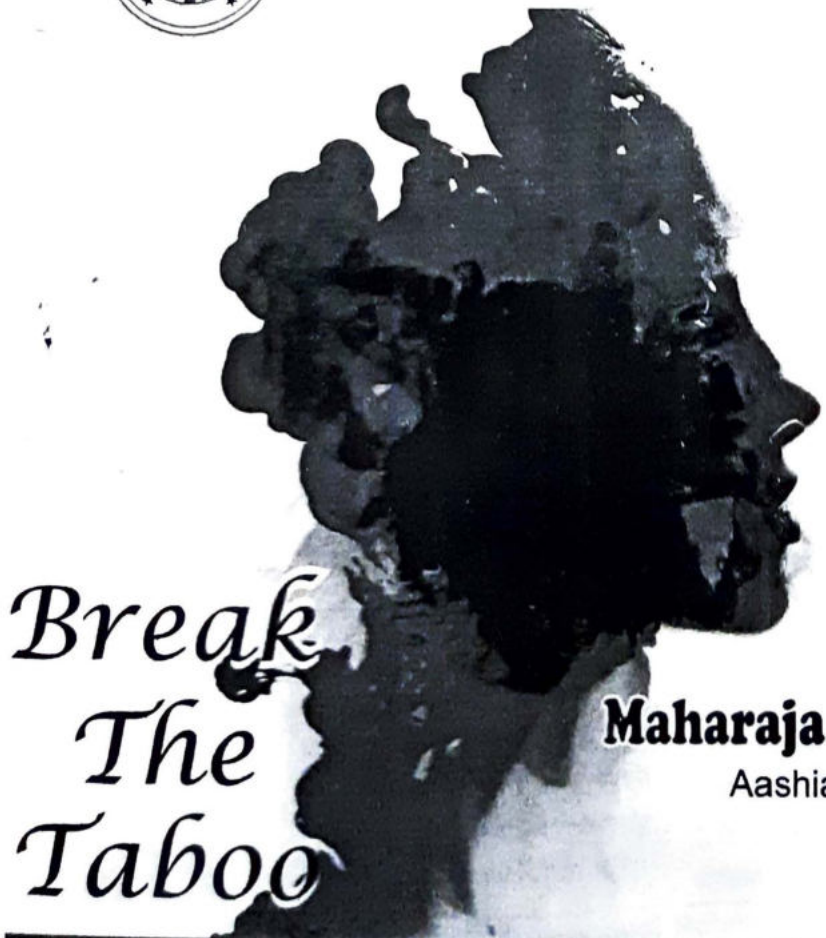

Organized by
Maharaja Bijli Pasi Govt. P.G. Colleg
Aashiana, Lucknow-226012 (UP) INDIA
http://mbpgpgc.in

42

रजोधर्म: टूटने दो मौन को

डॉ दीप्ति वाजपेयी
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत,
कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर

सारांश

रजोधर्म जैसी अत्यंत सामान्य प्राकृतिक प्रक्रिया को वर्जित विषय के रूप में देखना एक रूढ़िवादी मानसिकता के अतिरिक्त अन्य किसी रूप में परिभाषित नहीं किया जा सकता। आज २१वीं सदी में भी हमारा समाज रजोधर्म के विषय में बात करते हुए असहजता का अनुभव करता है, हालांकि यह आशा जनक तथ्य है कि अब इस विषय को गंभीरता से लिया जा रहा है सरकारी, स्वयंसेवी एवं मीडिया वर्ग ने इस पर अपनी चुप्पी तोड़ी है। रजोधर्म से संबंधित स्वच्छता प्रबंधन को लेकर मुहिम चलाई जा रही है, किंतु अभी भी इस दिशा में किए जाने वाले प्रयास अपर्याप्त और सीमित है। व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र इन सभी स्तरों पर इस ओर कार्य किए जाने की आवश्यकता है, किंतु सर्वप्रथम जनसामान्य में विषयगत वर्जना का परित्याग कर रजोधर्म को एक सामान्य और सहज बातचीत का अंग मानने की स्वीकारोक्ति परम आवश्यक है क्योंकि जब तक हम रजोधर्म पर मौन धारण किए रहेंगे तब तक लक्ष्य की प्राप्ति असंभव है।

शैशवावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक मानव शरीर में अनेकानेक परिवर्तन होते रहते हैं। प्रकृति का यह नियम स्त्री एवं पुरुष दोनों पर समान रूप से लागू होता है। विभिन्न प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य परिवर्तन की भांति रजोधर्म महिलाओं के शरीर में होने वाली प्राकृतिक प्रक्रिया है। यह प्राकृतिक प्रक्रिया अत्यंत सामान्य तथा सृजन के लिए अति आवश्यक है।

यह अत्यंत विडंबना पूर्ण तथ्य है कि आज २१वीं शताब्दी में भी पुरानी अवधारणाओं, मिथक एवं अज्ञानता के कारण रजोधर्म को लेकर जागरूकता एवं सहजता का अभाव है। समाज में रजोधर्म से संबंधित मुद्दों पर विचार विमर्शकरना वर्जित माना जाता है। यह सोच समाज के हर आयु वर्ग के स्त्री पुरुषों में सामान्य रूप से देखने को मिलती है। बालिकाओं के शरीर में हुए इस प्राकृतिक बदलाव को अनहोनी घटना की तरह मानते हुए इसे छुपा कर रखना और किसी को, विशेष तौर पर पुरुषों को इसकी भनक भी ना लगने देना संस्कार के रूप में देखा जाता है। रजोधर्म के विषय में संपूर्ण जानकारी ना होने पर लड़कियों को विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। वह प्रथम बार इस अवस्था में आने पर बहुत डर जाती है। उन्हें बहुत शर्म महसूस होती है साथ ही वह अपराध बोध से भी ग्रस्त हो जाती है।

रजोधर्म से संबंधित अनेक मिथक इस समस्या को और भी गंभीर बना देते हैं। परंपरा से चली आ रही रूढ़ीवादी विचारधारा के तहत रजोधर्म की अवधि में महिलाओं एवं बालिकाओं का अछूत हो जाना, धार्मिक कार्यों में भागना लेना, बाहर ना निकलना, रसोई घर में ना जाना, अलग कमरे में रहना जैसे आधारहीन तथ्य रजोधर्म को अस्वाभाविक परिस्थिति बना देते हैं। इस अमनोवैज्ञानिक और अमानवीय परंपरा से स्थापित मिथक के कारण रजोधर्म महिलाओं एवं लड़कियों के लिए एक समस्या का स्वरूप धारण कर लेता है तथा यह बालिकाओं के शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक पक्ष को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

२०१६ में टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस द्वारा कराई गई एक स्टडी के अनुसार १० में से ८ लड़कियों को आज भी मासिक धर्म के दौरान धार्मिक स्थलों में जाने एवं पूजा पाठ से वंचित रखा जाता है। १० में से ६ लड़कियों को खाना बनाने एवं रसोई घर में जाने की अनुमति नहीं मिलती। १० में से तीन लड़कियों को अभी भी इस दौरान अलग कमरों में रहने को बाध्य किया जाता है। इस प्रकार की परिस्थितियां बालिकाओं में हीन भावना पैदा करती है। वह कहीं ना